International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 06-01-2026, Accepted: 05-02-2026, Published: 20-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 142-145

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा की संरक्षक एवं संवर्धक–एक तार्किक विश्लेषण

डॉ. शीतल चौधरी
सहायक प्राध्यापक, जंतु विज्ञान, शासकीय महाविद्यालय शाहपुर, जिला–बैतूल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय सभ्यता आदिकाल से ही विश्व की सर्वोत्कृष्ट सभ्यताओं में से एक है। हमारी संस्कृति विश्व की अति प्राचीनतम एवं सर्व समावेशी संस्कृति है। वेदों से लेकर वर्तमान काल तक हमारे पास एक समृद्ध गौरवशाली विरासत रही है। प्रस्तुत शोध आलेख में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP–2020) के इन्हीं प्रावधानों को रेखांकित कर उनका विश्लेषण किया गया है, ताकि भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण एवं संवर्धन में NEP–2020 की भूमिका को जनमानस के सम्मुख लाया जा सके। NEP–2020 के परिचय में ही स्पष्ट किया गया है कि तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्व स्तरीय संस्थानों ने शिक्षण व शोध में ऊंचे प्रतिमान स्थापित किए थे। जिसका परिणाम था कि इसी शिक्षा व्यवस्था ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराह मिहिर, चाणक्य, पाणिनी, पतंजलि, मैत्रेयी, गार्गी और तिरुवल्लुवर जैसे अनेक विद्वानों को सृजित किया। इन विद्वानों ने फिर वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे खगोल विज्ञान, गणित, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, भवन निर्माण एवं स्थापत्य कला, योग, ललित कला इत्यादि में श्रेष्ठतम योगदान दिया। अतः स्पष्ट है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और संवर्धन की पोषक है।

मूल शब्दः भारतीय ज्ञान परंपरा, सभ्यता एवं संस्कृति, विरासत, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शिक्षा प्रणाली

प्रस्तावना
भारत हमेशा ही संपूर्ण विश्व के लिए मार्गदर्शक की भूमिका में रहा है। हमारा धर्म और अध्यात्म के प्रति लगाव विश्व के लिए प्रेरणादायी रहा है। हमारी शिक्षा पद्धति शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक उन्नति को ध्यान में रखकर ही बनाई जाती रही है। अपने धर्म व संस्कृति के प्रति गौरव का बोध कराना, प्रकृति के अनुकूल जीवन पद्धति अपनाना, संपूर्ण विश्व के कल्याण की कामना करना, हमारी शिक्षा प्रणाली का ध्येय रहा है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए भारत में अब तक 3 बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति क्रमशः 1968, 1986 और 2020 में लागू की गई।भारत के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि, शिक्षा नीति के निर्माण के लिए देश की लगभग 2.5 लाख ग्राम पंचायतें, 6600 विकासखंड और 650 जिलों से विचार आमंत्रित किए गए। इस प्रक्रिया के दौरान अध्यापकों, शिक्षाविदों, अभिभावकों, जनप्रतिनिधियों एवं व्यापक स्तर पर विद्यार्थियों से भी सुझाव प्राप्त कर चिंतन किया गया। अंततः जुलाई 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अलग–अलग खंडों एवं प्रावधानों में भारत के गौरवशाली इतिहास व भारतीय ज्ञान परंपरा से ओतप्रोत विषयों को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। यह दर्शाता है कि हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली हमारे लिए सदैव ही प्रेरणा स्रोत के रूप में दिशा बोध कराती है। गुरु शिष्य परंपरा, गुरुकुल शिक्षा पद्धति, योग व अध्यात्म, हस्त कौशल एवं धर्मपरायणता इत्यादि आज भी उतने ही प्रासंगिक है, जितने वैदिक काल में थे। नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति इन्हीं सभी विशेषताओं को आधुनिक स्वरूप में स्वीकारने का सुनियोजित दस्तावेज है, ताकि अतीत के गौरव के साथ–साथ वर्तमान की जरूरत को पूरा करते हुए भविष्य को सुरक्षित रखा जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य
1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का जन सुलभ विश्लेषण,
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय जीवन मूल्यों की प्रधानता की पहचान करना,
3. NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण के प्रयासों को चिन्हित करना,
4. NEP 2020 में भाषा, कला व संस्कृति के संरक्षण पर ध्यान आकर्षित करना।

शोध विधि
यह शोध आलेख प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर लिखा गया है। प्राथमिक स्रोत नई शिक्षा नीति 2020 के मूल अंश से एकत्रित किए गए हैं। जो भारत सरकार द्वारा जारी किया गया है। द्वितीयक स्रोत के अंतर्गत विभिन्न समाचार पत्रों, रिपोर्ट्स, पुस्तकों, विकिपीडिया और अन्य वेब आधारित पाठ्य सामग्री सम्मिलित है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण के प्रमुख प्रावधान
हमारे देश में 34 वर्षों बाद नई शिक्षा नीति ने वर्ष 2020 में आकार लिया है। जिसमें 2 लाख सुझावों का सहारा लिया गया है। इस नीति में ना केवल वर्तमान पीढ़ी को ध्यान में रखा गया है, बल्कि भावी पीढ़ी की आकांक्षाओं व चुनौतियों का भी ख्याल रखा गया है। हम जानते हैं कि उच्च शिक्षा में सामान्य नामांकन अनुपात को 2035 तक 26.3% से बढ़ाकर 50% तक ले जाना एक चुनौती है। इस कार्य को मूर्त रूप देने के लिए शोधपरक, नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने वाली शिक्षा नीति की परम आवश्यकता थी। NEP–2020 में इन्हीं विशेषताओं के साथ–साथ भारतीय परंपराओं और मूल्यों को भी उचित स्थान दिया गया है।
इस नीति में आने वाले 20 वर्षों का खाका तैयार किया गया है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के श्रेष्ठतम प्रतिमानों के साथ–साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), डाटा साइंस, मशीन लर्निंग का भी उल्लेख इसमें देखने को मिलता है। जो इसके सार्वभौमिक एवं भविष्यदर्शी स्वरूप को प्रकट करता है। प्रस्तुत शोध आलेख में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण व संवर्धन के लिए किए गए प्रावधानों का उल्लेख किया जा रहा है।

NEP–2020 के परिचय व मूलभूत सिद्धांतों में उल्लेख
NEP–2020 के कुल 4 खंड है। जिनमें भाग–1 स्कूल शिक्षा, भाग –2 उच्चतर शिक्षा, भाग–3 अन्य केंद्रीय विचारणीय मुद्दे एवं भाग–4 क्रियान्वयन की रणनीति है। इस नीति के प्रारंभ में प्रस्तुत परिचय में भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण व संवर्धन की दृष्टि से निम्न बातों को उद्धृत किया गया है–

"गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वजनिक पहुंच प्रदान करना वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है।"

"प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में यह नीति तैयार की गई है।"

उक्त पंक्तियां NEP–2020 के द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण को बल प्रदान करने वाली है। यह स्पष्ट है कि, हमारा प्राचीन ज्ञान आज भी प्रासंगिक व अनुकरणीय है। अतः आवश्यकता है, गहन शोध कार्य कर भावी पीढ़ी को इससे परिचित कराने की। जो कि NEP–2020 कर रही है।

NEP–2020 के 'विजन' में भारतीय मूल्यों का वर्णन

NEP–2020 के प्रारंभ में इसके मूलभूत सिद्धांतों का वर्णन किया गया है। कुल 22 बिंदुओं में से बिंदु क्रमांक 20 में भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहना उल्लेखित है। जो हमारी गौरवशाली परंपराओं एवं साहित्य को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने के महत्व को रेखांकित करता है। इस नीति के 'विजन' में भी प्रथम पंक्ति में ही भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली कहा गया है। इसके अलावा वैश्विक कल्याण व वैश्विक नागरिक जैसे शब्दों का प्रयोग 'वसुधैव कुटुंबकम' के भाव को पोषित करता है। नीति के बिंदु क्रमांक 4.28 एवं 15.1 में भारतीय जीवन मूल्यों के संरक्षण व संवर्धन के बारे में वर्णन किया गया है।

भारतीय समाज में जीवन मूल्यों का प्रमुख स्रोत धर्म–दर्शन ही रहा है। धर्म ही जीवन मूल्यों के प्रति अटल तथा अविचल आस्था उत्पन्न करता है। यहां धर्म से तात्पर्य किसी वर्ग विशेष, संप्रदाय की बात नहीं की जा रही है। यहां धर्म का अभिप्राय जीवन में धारण करने वाले मूल्यों से है। मूल्य स्वयं एक व्यवस्था है जो संबंधों को संतुलित कर के व्यवहारों में एकरूपता स्थापित करते हैं।

मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण कहे गए हैं, जो हर व्यक्ति को पालन करना चाहिए।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यं अक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।

अर्थ: सत्य, अहिंसा, अक्रोध, ईश्वर, धैर्य, क्षमा, अंदर और बाहर की शुद्धि, अस्तेय, विद्या एवं विवेक धारण यह मनुष्य मात्र के धर्म माने जाते हैं। महर्षि पतंजलि ने भी पांच यमो को महाव्रतों की संज्ञा दी है। इन पांच महाव्रतो का पालन किसी भी देश, काल, परिस्थिति में किया जा सकता है। पांच यम–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को कहा गया है। जैन दर्शन में भी इन्हें पांच महाव्रतो के रूप में स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार बौद्ध धर्म में भी शील, समाधि और प्रज्ञा के माध्यम से इन्हीं गुणों को धारण करने का संदेश मिलता है। वास्तव में आज इन जीवन मूल्यों को अपनाने की बहुत अधिक आवश्यकता है। इस दिशा में NEP–2020 के माध्यम से कई सुझाव दिए गए हैं। जिन्हें धरातल पर उतारने की आवश्यकता है।

चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा को प्रमुखता

किसी भी राष्ट्र का चरित्र उस राष्ट्र के नागरिकों के आचार–विचार से तय होता है। वर्तमान शिक्षा नीति में भी चरित्र निर्माण को महत्व देकर सनातन भारत की ओर लौटने का संकेत दिया गया है। प्राचीन काल में विद्यालय मंदिरों में संचालित किए जाते थे। सामान्यतः प्रत्येक गांव में एक मंदिर था एवं प्रत्येक गांव में एक विद्यालय। एक प्रसिद्ध अंग्रेज अधिकारी थॉमस मुनरो के अनुसार वर्ष 1826 में दक्षिण भारत में एक लाख अठ्ठाईस हजार विद्यालय थे। जिनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य विद्यार्थियों की संख्या 25% थी जबकि शुद्र विद्यार्थियों की संख्या 65% थी। प्राचीन भारत में इन विद्यालयों में उच्च चरित्र की शिक्षा दी जाती थी। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र, धर्मराज युधिष्ठिर, दानवीर कर्ण, तथागत बुद्ध, महावीर स्वामी इत्यादि हमारे प्रेरणा पुरुष व आराध्य के रूप में हमें आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देते रहे हैं। शिक्षा नीति के बिंदु क्रमांक 4.4 एवं 4.28 में चरित्र निर्माण के साथ कौशल से सुसज्जित विद्यार्थियों के समग्र विकास की बात कही गई है। भारतीय जीवन मूल्यों व नैतिक शिक्षा के पोषण के लिए विद्यालयों में पंचतंत्र की मूल कहानियों, जातक कथाओं, हितोपदेश की कहानियां एवं दंत कथाओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का महत्वपूर्ण सुझाव दिया गया है।

संस्कृत भाषा व साहित्य का संरक्षण

संस्कृत भाषा भारतवर्ष के मूल में बसती है। संस्कृत न केवल विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। बल्कि अब तो विज्ञान भी स्वीकारता है कि, संस्कृत एक वैज्ञानिक भाषा भी है। जो विचार संप्रेषण के साथ–साथ कंप्यूटर कोडिंग के लिए भी अत्यंत उपयुक्त भाषा है। इसी प्रकार संस्कृत साहित्य बेहद अनमोल व ज्ञान का अकूत भंडार है। वर्तमान शिक्षा नीति में बिंदु क्रमांक 4.16 में 'द लैंग्वेज इज ऑफ इंडिया' प्रोजेक्ट के अंतर्गत ग्रेड 6 से 8 में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' पहल में प्रमुख भारतीय भाषाओं की उल्लेखनीय एकता के बारे में विद्यार्थियों को सीखाने का उल्लेख किया गया है। बिंदु क्रमांक 4.17 में फाउंडेशन व मिडिल स्कूल स्तर पर संस्कृत को सहज व सरल बनाने हेतु सरल मानक संस्कृत (एस एस एस) लिखे जाने पर जोर दिया गया है, साथ ही संस्कृत साहित्य में गणित, दर्शन, व्याकरण, संगीत, राजनीति, चिकित्सा, वास्तुकला, धातु विज्ञान, नाटक, कविता, कहानी और बहुत कुछ के अध्ययन–अध्यापन को स्वीकारोक्ति प्रदान की गई है। इस प्रकार संस्कृत को त्रि–भाषा के मुख्यधारा विकल्प के साथ स्कूल व उच्चतर शिक्षा के सभी स्तरों में सम्मिलित करने की अनुशंसा की गई है। बिंदु क्रमांक 22.15 में संस्कृत भाषा को केवल संस्कृत पाठशाला एवं विश्वविद्यालय तक सीमित न रखकर मुख्यधारा में लाने हेतु सुझाव दिए गए हैं। इस हेतु शिक्षा व संस्कृत विषय में 4 वर्षीय बहुविषयक बीएड डिग्री के द्वारा मिशन मोड में पूरे देश में संस्कृत शिक्षकों को बड़ी संख्या में व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करने का विचार रखा गया है।

पुरातन कला–कौशल को मान्यता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान कौशल के संरक्षण के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं। प्राचीन काल में शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं थी। अपितु चरित्र निर्माण के साथ–साथ हस्त कौशल व विभिन्न कलाओं की पोषक भी रही है। ये कलाएं धनार्जन के साथ–साथ मनोरंजन व संस्कृति के संरक्षण में भी सहायक सिद्ध होती थी। शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में से एक स्वालंबन है। कला–कौशल का विकास इसमें सहायक होता है। शिक्षा नीति के बिंदु क्रमांक 1.2 एवं 1.3 में स्कूल शिक्षा में चित्रकला, शिल्प, पहेलियां, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को ई सी सी ई (Early Childhood Care and Education) के अंतर्गत शामिल कर सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, शिष्टाचार, नैतिकता, समूह में कार्य करना और आपसी सहयोग को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। शिक्षा नीति के बिंदु क्रमांक 4.26 में स्कूली शिक्षा में ग्रेड 6 से 8 के दौरान स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप बढ़ईगिरी, बिजली का काम, बागवानी एवं मिट्टी के बर्तनों का निर्माण आदि हस्त कौशलों से संबंधित पाठ्यक्रम निर्माण का सुझाव दिया गया है।

जिसमें कक्षा 6 से 8 में पढ़ने के दौरान सभी विद्यार्थी एक दस दिन के बस्ता रहित पीरियड में भाग लेंगे तथा स्थानीय व्यवसायिक विशेषज्ञ जैसे बढ़ाई, माली, कुम्हार, कलाकार आदि के साथ प्रशिक्षु के रूप में काम करेंगे। इसी प्रकार 'भारत का ज्ञान' के अंतर्गत बिंदु क्रमांक 4.27 में बताया गया है कि भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर आधारित एक आकर्षक पाठ्यक्रम एक वैकल्पिक के रूप में माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध होगा। इसके अलावा बिंदु क्रमांक 11.1 में 64 कलाओं का उल्लेख किया गया है। भारतीय साहित्य में कलाओं की अलग–अलग गणना दी गयी है। 'कामसूत्र' में 64 कलाओं का वर्णन है। इसके अतिरिक्त 'प्रबन्ध कोश' तथा 'शुक्रनीति सार' में भी कलाओं की संख्या 64 ही है। 'ललितविस्तर' में तो 86 कलाएँ गिनायी गयी हैं। शैव तन्त्रों में चौंसठ कलाओं का उल्लेख मिलता है। ललितासहस्रनाम में देवी को 64 कलाओं का मूर्तस्वरूप कहा गया है। भारतीय कलाओं के संरक्षण को लेकर NEP–2020 में कई प्रावधान है। जिनमें क्रमशः बिंदु क्रमांक 11.7, 12.7, 16.4, 22.2, 22.3, 22.8, 22.16, 22.19 में व्यापक सुझाव दिए गए हैं।

स्वदेशी खेलों को महत्व

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य मानसिक विकास के साथ–साथ शारीरिक विकास भी है। क्योंकि हम जानते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य– 'कुमारसम्भव' में एक अनुपम बात लिखी– 'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्' अर्थात् शरीर ही धर्म का पहला और उत्तम साधन है। व शरीर ही धर्म को जानने का माध्यम है। शिक्षा नीति के बिंदु क्रमांक 4.27 में स्कूली शिक्षा में मस्ती और स्वदेशी खेलों के द्वारा विभिन्न टॉपिक्स और विषयों को सीखने के लिए स्कूलों में प्रतियोगिताएं आयोजित किए जाने का उल्लेख किया गया है। कबड्डी, खो–खो, कुश्ती, मलखंब, थांग–ता, कलरीपायट्टू, रस्साकशी, हेक्को, तीरंदाजी इत्यादि सभी स्वदेशी खेल शारीरिक व मानसिक विकास के साथ–साथ हमें अपनी संस्कृति व जड़ों से जोड़ने का कार्य करते हैं। शिक्षा नीति में इनका उल्लेख सराहनीय है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति को आधुनिक स्वीकार्यता

> दुनिया बदलने के लिए शिक्षा सबसे मजबूत हथियार है–नेल्सन मंडेला।

प्राचीन काल से ही शिक्षा हर सभ्यता का अभिन्न हिस्सा रही है। समय के साथ–साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदला है। शिक्षा की ऐसी ही एक प्राचीन प्रणाली 'गुरुकुल शिक्षा पद्धति' है। इस प्रणाली की शुरुआत वैदिक काल में हुई। इसमें कौशल आधारित शिक्षा के साथ वेद ,पुराण आदि को सीखने का चलन था। शिक्षा संस्कृति और धर्म से प्रेरित थी। व्यवसायिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए समग्र शिक्षा को महत्व दिया जाता था। गुरुकुल में चुने जाने का आधार बच्चों का आचरण व नैतिक स्तर होता था। गुरुकुल में गुरु के सानिध्य में रहकर गुरु के आचरण से भी सीखने का अवसर मिलता है। अतः गुरु को आचार्य भी कहा जाता था। इन्हीं विशेषताओं के चलते NEP–2020 में बिंदु क्रमांक 5.1 में शिक्षकों के प्रति आदर और सम्मान को पुनर्जीवित करने की बात कही गई है। बिंदु क्रमांक 10.2 एवं 11.1 में प्राचीन गुरुकुलों से प्रेरणा लेकर आधुनिक विश्वविद्यालय स्थापित करने का सुझाव दिया गया है। जहां देश–विदेश के विद्यार्थी आधुनिक विषयों के साथ–2 भारतीय दर्शन व 'भारत विद्या' आदि का अध्ययन कर सकेंगे।

आदिवासी/जनजातीय एवं स्थानीय संस्कृति का अध्ययन

नवीन शिक्षा नीति में भारत की आदिवासी व जनजातीय संस्कृति के संरक्षण हेतु विविध प्रावधान किए गए हैं। जो कि भारतीय ज्ञान परंपरा का अहम हिस्सा है। भारत में निवास करने वाली जनजातियों की अपनी बोली, संगीत, चित्रकला और कहानियां सहित व्यापक समृद्ध और अनोखी सांस्कृतिक परंपराएं हैं। उनके अपने आस्था के विविध केंद्र बिंदु हैं। अतः आदिवासी संस्कृति का संरक्षण नितांत आवश्यक है। शिक्षा नीति के बिंदु क्रमांक 4.16 में विविध भारतीय भाषाओं के साथ–साथ आदिवासी भाषाओं की प्रकृति और संरचना को समझने हेतु प्रयासों का वर्णन किया गया है। बिंदु क्रमांक 15.1 में जनजातीय परंपराओं के प्रति जागरूक रहने तथा बिंदु क्रमांक 22.17 में शास्त्रीय, आदिवासी, लुप्तप्राय भाषाओं सहित भारतीय भाषाओं को संरक्षित रखने के सुझाव वर्णित है।

भारतीय भाषा, कला व संस्कृति का संवर्धन

भारत विविधताओं का देश है। यहां प्रत्येक 40 किलोमीटर पर बोली व खानपान में अंतर आ जाता है। भारत में नृत्य, गीत, संगीत, नाटक कला, लोक परंपराओं, कला प्रदर्शन, धार्मिक रीति–रिवाज, अनुष्ठानों, चित्रकारी एवं लेखन के क्षेत्रों में एक व्यापक संग्रह उपलब्ध है। जो मानव सभ्यता की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' के रूप में जाना जाता है। विभिन्न कलाओं के संरक्षण व अध्ययन के लिए शिक्षा नीति के बिंदु क्रमांक 1.2, 1.3, 4.26, 11.1, 11.4, 11.7, 12.7, 16.4, 17.7, 22.2, 22.3, 22.8, 22.16, 22.19 में अनेक सुझाव दिए गए हैं। शिक्षा नीति के अनुसार प्राचीन भारतीय साहित्य जैसे बाणभट्ट की 'कादंबरी' शिक्षा को 64 कलाओं के ज्ञान के रूप में परिभाषित या वर्णित करती है। इन 64 कलाओं में न केवल गायन और चित्रकला जैसे विषय शामिल है बल्कि वैज्ञानिक क्षेत्र जैसे गणित और रसायन शास्त्र, व्यवसायिक क्षेत्र जैसे बढ़ई का काम और कपड़े सिलने का काम, व्यवसायिक कार्य जैसे औषधि तथा अभियांत्रिकी के साथ ही साथ व्यवहारिक कौशल भी शामिल है। आधुनिक युग में जिसे 'लिबरल आर्ट्स' (कलाओं का उदार नजरिया) कहा जाता है, को भारतीय शिक्षा में शामिल करना भी है।

भारतीय भाषाओं के प्रचार प्रसार के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनेक प्रावधान किए गए हैं। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ–साथ हमारे गौरवशाली इतिहास, व ज्ञान को साहित्य के रूप में लिपिबद्ध करने का जरिया भी है। शिक्षा नीति के बिंदु क्रमांक 4.16, 4.18, 22.4, 22.5, 22.15, 22.17 इत्यादि में भाषा व संस्कृति के उत्थान व संरक्षण के लिए दिशा निर्देश दिए गए हैं। संविधान में वर्णित प्रमुख भाषाओं जैसे तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम के अतिरिक्त पाली, फारसी, प्राकृत आदि भाषाओं को ऑनलाइन माड्यूल के जरिए स्कूलों में पढ़ाने का सुझाव दिया गया है। इसी क्रम में आदिवासी बोली व भाषाओं को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने हेतु सुझाव देखने को मिलते हैं। 'त्रिभाषा फार्मूला' के अंतर्गत 1. शास्त्रीय भाषाएं जैसे संस्कृत, अरबी, फारसी 2. राष्ट्रीय भाषाएं, 3. आधुनिक यूरोपीय भाषाएं सम्मिलित की गई हैं। इन तीनों श्रेणियों में किन्ही तीन भाषाओं को पढ़ाने का प्रस्ताव है। संस्तुति यह भी है कि हिंदी भाषी राज्यों में दक्षिण की कोई भाषा पढ़ाई जानी चाहिए। अतः स्पष्ट है कि नवीन शिक्षा नीति 2020 भाषा, कला और संस्कृति के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है।

ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण

शिक्षा केवल चारदीवारी के मध्य कक्षा में दी जाने वाली प्रक्रिया नहीं है। शिक्षा के अंतर्गत अपने धर्म–संस्कृति व इतिहास के प्राचीन मान बिंदुओं अर्थात पर्यटन स्थलों का भ्रमण अत्यंत प्रभावकारी होता है। पर्यटन के द्वारा प्राकृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक व वैज्ञानिक ज्ञान में अभीवृद्धि की जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिंदु क्रमांक 22.1 एवं 22.12 में लिखा गया है कि भारत संस्कृति का समृद्ध भंडार है। अतः 'अतुल्य भारत' अभियान के अंतर्गत विद्यार्थियों को 100 पर्यटन स्थलों की पहचान कर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का ध्येय लेकर इन स्थलों

और उनके इतिहास, वैज्ञानिक योगदान, परंपराओं, स्वदेशी साहित्य और ज्ञानार्जन आदि के लिए भ्रमण का सुझाव दिया गया है। इन स्थलों के भ्रमण में नई पीढ़ी भारत के प्राचीन गौरवशाली इतिहास व ज्ञान परंपराओं से भी परिचित होगी। बिंदु क्रमांक 22. 19 में एक वेब आधारित प्लेटफार्म/ विकिपीडिया/पोर्टल का भी सुझाव है। जिसमें वीडियो, शब्दकोश, रिकॉर्डिंग एवं अन्य सामग्री होगी। इन प्रयासों के लिए नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एन आर एफ) द्वारा वित्तीय सहायता का उल्लेख किया गया है।

उपसंहार

किसी भी राष्ट्र को यदि उच्च आदर्शों से युक्त, समर्पित व देशभक्त पीढ़ी का निर्माण करना है, तो उसे अपनी भावी पीढ़ी को अपनी परंपराओं, मान्यताओं एवं सांस्कृतिक मान बिंदुओं से परिचित कराना परम आवश्यक है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण व संवर्धन के लिए अनेक सुझाव दिए गए हैं। इसमें भारतीय भाषाओं के संरक्षण के साथ–साथ कला व संस्कृति के संरक्षण हेतु कई प्रावधानों का उल्लेख देखने को मिलता है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति से प्रभावित होकर नालंदा, तक्षशिला, वल्लभी, विक्रमशिला जैसे प्राचीन गुरुकुलों से प्रेरणा लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना का संकल्प इसमें लिया गया है। इस नीति में संस्कृत भाषा व संस्कृति के उत्थान के सुझाव भारतीय ज्ञान परंपरा को नव जीवन प्रदान करेंगे। भारतीय जीवन मूल्यों को ध्यान में रखकर नैतिक शिक्षा पर बल दिया गया है। आचार्य विष्णु शर्मा रचित पंचतंत्र, नारायण पंडित रचित हितोपदेश, महात्मा बुद्ध से संबंधित जातक कथाएं आदि को पाठ्यक्रम में शामिल कर नैतिक मूल्यों से नई पीढ़ी को परिचित कराया जा सकता है। गुरु के प्रति आदर व सम्मान का भाव बढ़ाने हेतु इस नीति में कई सुझाव दिए गए हैं। ऐतिहासिक व धार्मिक स्थलों का भ्रमण व अध्ययन पाठ्यक्रम को अधिक व्यापक व जड़ों से जुड़ा हुआ बनाता है। राष्ट्र निर्माण के लिए चरित्र निर्माण सबसे ज्यादा जरूरी है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूलभूत सिद्धांतों में से एक है। प्राचीन दुर्लभ कलाओं एवं हस्त कौशलों के संरक्षण के लिए इसमें कई सुझाव रखे गए हैं।

किसी भी नीति या नियम को बनाने से ज्यादा उसके अनुपालन में चुनौती होती है। 29 जुलाई 2020 को लागू इस महत्वाकांक्षी, दूरदर्शी, सर्वसमावेशी शिक्षा नीति के अस्तित्व में आने के साथ ही विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक, शिक्षाविद, वैज्ञानिक, जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी, विभिन्न राज्य सरकारें एवं केंद्रीय सरकार को सुनियोजित तरीके से आम जनता के सहयोग से स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग करते हुए आपसी तालमेल के साथ इसके क्रियान्वयन के लिए कृत संकल्पित होना पड़ेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सकल घरेलू उत्पाद का 6 फ़ीसदी शिक्षा पर खर्च करने का सुझाव दिया गया है, जो कि 2021–22 में जीडीपी का 3.1% था। जबकि चिली और नार्वे जैसे देश कुल जीडीपी का 6. 6% तक शिक्षा पर खर्च कर रहे हैं। हमें इस दिशा में भी सोचना होगा। तभी यह नीति अपने मूल उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेगी और भारत पुनः विश्व गुरु के पद पर सुशोभित हो सकेगा।

संदर्भ सूची

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मूल पाठ. https://www-education.gov.in/sites/upload–files/mhrd/files/NEP–final–HINDI–0-pdf
2. प्रेम परिहार (2020), नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 संभावनाएं एवं चुनौतियां, इंटरनेशनल जर्नल आफ अप्लाइड रिसर्च, खंड 6, अंक 9, पृष्ठ क्र.109–111.
3. मीना और मोनिका शर्मा (2021) नए भारत की नींव– राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020, हंस शोध सुधा, खंड 1, अंक 3, पृष्ठ क्र. 59–62.
4. डॉ. असलम सैयद और प्रतिमा शुक्ला (2022), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की चुनौतियां और अवसरों पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल आफ एडवांस्ड रिसर्च इन साइंस, कम्युनिकेशन एंड टेक्नोलॉजी, खंड 2, अंक 1, पृष्ठ क्र. 127–131.
5. बिरेंद्र सिंह और कुकन देवी (2022), उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि, इंटरनेशनल जर्नल आफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज, खंड 9, अंक 1, पृष्ठ क्र.17–20.
6. https://www.drishtiias.com/hindi/daily–news–analysis/national–education–policy–2020.
7. https://hindi.nvshq.org/new–national–education–policy/
8. https://tinyurl.com/ytkus9a8
9. https://www.bbc.com/hindi/india–53581084